

B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA

(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)

BA DEGREE-2

HISTORY (SUB./GEN.)

UNIT-5(B)

DEPARTMENT OF HISTORY

PANKAJ KR.MISHRA

DATE-22/09/2020

TOPIC- भारत छोड़ो आंदोलन(1942 ई.)

(QUIT INDIA MOVEMENT (1942 AD))

Part-3

आंदोलन का सामाजिक आधार

भारत छोड़ो आंदोलन में आम जनता की हिस्सेदारी तथा समर्थन व्यापक रहा। इत्रों की विशेषरूप से भागीदारी देखने को मिलती है।

- (A) आंदोलन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही। अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी तथा मेवला आदि महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।
- (B) देश भर के किसानों ने आंदोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।
- (C) बहुत से हीटे जमींदारों ने भी आंदोलन में हिस्सा लिया खासकर ऊपर और बिहार में।
- (D) मजदूरों की भागीदारी रही।
- (E) मुसलमानों की भागीदारी बहुत उल्लेखनीय नहीं रही।
- (F) हिन्दू महासभा जैसे उसके प्रमुख नेताओं जैसे वी.डी. सावरकर, अय्यासा प्रसाद मुखर्जी जैसे नेताओं ने भारत छोड़ो आंदोलन की निंदा की।
- (G) RSS भी इस आंदोलन से अलग-थलग रहा।
- (H) भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ने भारत छोड़ो आंदोलन का समर्थन नहीं किया क्योंकि दिसंबर 1941 ई० में अविधत संघ भी मित्रराष्ट्रों की तरफ से अंग्रेजों की तरफ शामिल हो गया।
- (I) भीम राव अंबेडकर ने भी आंदोलन का समर्थन नहीं किया।

महत्त्व

i> सरकारी दमन की नीति से इस आंदोलन को दबा दिया गया था। लेकिन ब्रिटिश सरकार यह समझ गयी कि भारत में व्याप्त अनसंतोष कितना गहरा है। इस कृष्टि से आंदोलन को असफल नहीं कहा जा सकता क्योंकि इस क्रांति ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत की स्वाधीनता का मामला जब कांग्रेस हल तक सीमित न रहकर भारत की जनता का मसला बन गया है।

ii> आंदोलन ने साम्राज्यवाद के विरुद्ध भारत को आक्रोश न स्वतंत्र होने के संकल्प को प्रभावशाली तथा धुनिधित्त दंड से व्यस्त किया।

iii> इस आंदोलन के बाद ब्रिटिश सरकार के खिलाफ में वह बल अच्छी तरह स्पष्ट आ गयी कि भारत में उनके साम्राज्यवादी शासन के सिर्फ जिने चुने हिन रहे गये हैं।

→ एक अर्थ में भारत को आंदोलन भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की स्मृति का परिचायक है क्योंकि इस आंदोलन के पश्चात् प्रश्न सिर्फ तब कब तक ही था कि स्वतंत्रता का हस्तान्तरण किस तरीके से हो और स्वतंत्रता के बाद सरकार का स्वरूप क्या हो।

Pankaj
22/09/2020